मसीह का जीवन, 1

डेविड एल.रोपर

THROUGH THE SCRIPTURES.com

पाठ्यक्रम: मसीह का जीवन, 1

लेखक : डेविड एल.रोपर

इस पाठ्यक्रम को ट्रुथ फॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल द्वारा प्रकाशित ट्रुथ फॉर टुडे श्रृंखला के The Life of Christ विषय से तैयार किया गया है, और अनुमति प्राप्त करके इसका प्रयोग हुआ है।

कॉपीराइट © 2001-2002, 2016

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक के किसी भी भाग को बिना प्रकाशक की लिखित अनुमति के किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित न किया जाए।

इस एल्क्ट्रोनिक एजुकेशनल टूल में हिंदी RV के इलेक्ट्रोनिक वर्शन का प्रयोग बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की पूर्व अनुमति से हुआ है।

महत्वपूर्ण सूचना

यह एकल प्रयोक्ता का साधन है।

ThroughTheScriptures.com के पाठ्यक्रम के विद्यार्थी के रूप में आपको इस डिजिटल पुस्तक में प्रवेश करने की अनुमति है ताकि आप इसके भागों को अपने पाठ्यक्रम के रूप में प्रयोग कर सकें तथा पाठ्यक्रम के पश्चात व्यक्तिगत रूप से इस्तेमाल करने हेतु प्रयोग कर सकें। आपको इस पाठ्यक्रम की सामग्री किसी भी रीति से वितरित करने की अनुमति नहीं है।

इस फाइल पर आपका नाम और ईमेल एड्रेस डिजिटली चिह्नित है। यदि आप इस फाइल के किसी भाग को कहीं दूसरों को बांटते, बेचते, देते या वितरित करते हैं तो इसका परिणाम आपके विद्यार्थी अकाउंट को बंद किया जाना हो सकता है।

आपको अपने व्यक्तिगत प्रयोग हेतु इन लेखों की प्रतियाँ बनाने की अनुमति है। आपको यह सलाह दी जाती है कि आप इन लेखों की कॉपी एक से अधिक स्थानों में रखें ताकि कोई गड़बड़ी या कंप्यूटर में खराबी होने की स्थिति में भी वह फाइल वहां सुरक्षित रहे।

सुसमाचार के चार वृत्तांत
मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना

हम नये नियम की पहली चार पुस्तकों का अध्ययन करने जा रहे हैं, जिनका नाम उनके लेखकों के नाम पर ही रखा गया है।

मत्ती-एक पूर्व चुंगी लेने वाला और यीशु का एक प्रेरित।

मरकुस-प्रेरितों के काम की पुस्तक वाला यूहन्ना मरकुस, प्रेरिताई के समय का एक जवान प्रचारक।

लूका-डॉ. लूका, जो रोम की यात्रा समेत कई मिशनरी यात्राओं में पौलुस के साथ था।

यूहन्ना-एक पूर्व मछुआरा व ''प्रिय'' प्रेरित।

पुस्तक में बाद में हम एक-एक करके मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना की पुस्तकों को देखेंगे, परन्तु अभी हम उन सब पर संक्षेप में विचार करना चाहते हैं।

एक कहानी के चार विवरण

मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना की पुस्तकों को प्राय: ''चार सुसमाचार'' कहा जाता है, परन्तु वास्तव में वे एक ही सुसमाचार के *चार विवरण या वृत्तांत* हैं।[1]

पहली तीन पुस्तकों को प्राय: ''सहदर्शी सुसमाचार'' या सिनोप्टिक गॉस्पल्स कहा जाता है। अंग्रेज़ी शब्द ''synoptic'' ''इकट्ठा'' के साथ ''देखना'' के अर्थ वाले शब्द के लिए एक यूनानी शब्द को मिलाता है। इस प्रकार ''सिनोप्टिक'' शब्द का अर्थ ''इकट्ठे देखना'' है। पहली तीन पुस्तकों को ''सिनोप्टिक गॉस्पल्स'' यानी ''सहदर्शी सुसमाचार'' कहा जाता है, क्योंकि उनमें यीशु की एक दूसरे से मिलती-जुलती बातें हैं। ये सभी पुस्तकें सम्भवतया सत्तर ईस्वी में यरूशलेम के विनाश से पहले लिखी गई थीं।

यूहन्ना की पुस्तक को कभी-कभी ''ऑटोप्टिक [स्व-विचार वाला] गॉस्पल''[2] कहा जाता है, क्योंकि इसमें दूसरी तीन पुस्तकों से अलग विचार मिलता है। यूहन्ना की पुस्तक सम्भवतया पहली तीन पुस्तकों के बाद, 90 ईस्वी के दशक में अर्थात पहली शताब्दी के अन्त में लिखी गई थी।

चार पुस्तकें क्यों?

परमेश्वर ने हमें चार पुस्तकें क्यों दीं, जिनमें एक ही समय तथा एक ही कहानी का वर्णन है ? पवित्र शास्त्र में, अन्य समयों में एक पुस्तक को एक से अधिक लोगों ने लिखा है (1 शमूएल से 2 राजाओं की घटनाएं 1 तथा 2 इतिहास में भी मिलती हैं), परन्तु चार

पुस्तकों में एक ही कहानी का होना असामान्य बात है।

कलीसिया के प्रारम्भिक इतिहास में लोग अनुमान लगाते थे कि ये चार पुस्तकें क्यों हैं। इस बारे में एक अनुमान यह था कि ''चार मनुष्य का [सांकेतिक] अंक'' है। हम नहीं जानते कि परमेश्वर ने यह विशेष अंक क्यों चुना, परन्तु तथ्य यह है कि बहु-वृत्तांत के लिए उसका प्रेरणा देना कई बातों का संकेत है:

(1) चार वृत्तांतों से पता चलता है कि यीशु की कहानी *कितनी महत्वपूर्ण* है।

(2) चार वृत्तांतों या विवरणों से यीशु की कहानी की *प्रामाणिकता* पर ज़ोर का पता चलता है। मूसा ने कहा था कि ''*दो वा तीन* साक्षियों के कहने से बात पक्की ठहरे'' (व्यवस्थाविवरण 19:15ख)। *चार* साक्षी तो उससे भी महत्वपूर्ण हैं।

(3) इन चार वृत्तांतों से यीशु के *बहुआयामी होने* का पता चलता है। एक लेखक शायद उसके साथ कभी न्याय न कर पाता।

> लंदन की नैशनल गैलरी में चार्ल्स प्रथम की एक ही कपड़े पर तीन आकृतियां हैं। एक आकृति में उसका सिर दाहिनी ओर मुड़ा हुआ है; दूसरी में बाईं ओर; और मध्य वाली में उसका पूरा चेहरा दिखाई पड़ता है। इस परिणाम की यही कहानी है। वैन डिक ने उनमें रोमी मूर्तिकार, बरनिनी के लिए रंग भरा, ताकि उनकी सहायता से वह राजा का ऊपर का धड़ बना सके। उन आकृतियों को मिलाकर, बरनिनी ''बोलती'' हुई लगने वाली एक मूर्ति बना सकता था। उसके लिए एक ही दृश्य काफ़ी नहीं होना था।
>
> सुसमाचार के वृत्तांतों का इन तीन तस्वीरों वाला उद्देश्य ही होगा। हर पुस्तक में हमारे प्रभु के पृथ्वी पर के जीवन को अलग पहलू से दिखाया गया है। इन सब को मिलाकर हमें उसकी सम्पूर्ण तस्वीर मिलती है। वह एक तो राजा था ही, सिद्ध सेवक भी था। वह मनुष्य का पुत्र था, परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वह परमेश्वर का पुत्र भी था।[3]

चार वृत्तांतों की तुलना करना

इन चारों वृत्तांतों का मूल उद्देश्य एक ही है-यीशु को प्रकट करना-परन्तु हर वृत्तांत स्पष्टतया अलग-अलग पृष्ठभूमि वाले श्रोताओं को ध्यान में रखकर थोड़ा-सा अलग दृष्टिकोण से लिखा गया था।[4] नीचे दिए गए चार्ट में चारों वृत्तांतों की तुलना की गई है। ''सुसमाचार के वृत्तांतों की एक संक्षिप्त तुलना'' वाला चार्ट देखें।

मत्ती की पुस्तक मुख्य तौर पर *यहूदियों* के लिए लिखी गई थी। उसने पुराने नियम के एक सौ से अधिक हवाले दिए और यहूदियों में परिचित शब्दों, जैसे ''दाऊद की सन्तान'' (मत्ती 1:1) का इस्तेमाल किया। उसने यीशु को एक राजा के रूप में प्रस्तुत किया, जो अपना राज्य स्थापित करने के लिए आया था; पुस्तक में ''राज्य'' शब्द पचपन बार आता है। उसने मसीहा के रूप में यीशु पर विशेष ज़ोर दिया और उसकी शिक्षाओं, उसके राज्य तथा उसके अधिकार के बारे में लिखा।[5]

मत्ती के उलट, लगता है कि मरकुस ने गैर यहूदी श्रोताओं के लिए लिखा। उसने अपनी पुस्तक में से उन बातों को, जिनमें अन्यजातियों की दिलचस्पी नहीं थी, निकाल दिया, जैसे वंशावलियां उसने यहूदी परम्परा का उल्लेख करके उसकी व्याख्या भी की। बहुत से लेखकों का विचार है कि मरकुस *रोमी* श्रोताओं को ध्यान में रखकर लिख रहा था;[6] उसने कहीं-कहीं कहानियों में लातीनी वाक्यांशों का इस्तेमाल किया, जबकि दूसरे लेखकों ने यूनानी वाक्यांशों का। सिकन्द्रिया के क्लेमैंट (लगभग 150-215 ईस्वी) के अनुसार, मरकुस से रोम के मसीहियों ने विनती की थी कि जैसा उसने पतरस से सुना था, उसी के अनुसार मसीह के जीवन का वृत्तांत लिखे।[7] मरकुस यीशु के *कामों* तथा उसकी *शिक्षा* पर अधिक ध्यान देता लगता है। उसने यीशु को एक सेवक के रूप में चित्रित किया, जो दूसरों की सहायता करता था (मरकुस 10:45)। उसने यीशु के आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर दिया, क्योंकि उन में लोगों के लिए प्रभु के प्रेम तथा सम्भाल का पता चलता है।

मरकुस की तरह, स्पष्टतया लूका ने भी गैर यहूदी श्रोताओं के लिए ही लिखा। परन्तु मरकुस का वृत्तांत जहां काम में यकीन रखने वाले रोमियों के लिए लगता है, वहीं लूका का वृत्तांत बुद्धिजीवी अर्थात छात्र के लिए लिखा गया लगता है। बहुत से लोगों का निष्कर्ष है कि लूका के ध्यान में *यूनानी* श्रोता थे। उसके वृत्तांत में यीशु को ''मनुष्य का पुत्र'' (लूका 19:10) के रूप में दिखाया गया है और उसके सिद्ध मनुष्य होने पर विशेष ज़ोर दिया गया है।

यूहन्ना का वृत्तांत सम्भवतया अन्य तीनों के बाद लिखा गया और उसका अपना विशेष ज़ोर है। यीशु के बारे में अलग-अलग भ्रान्तिपूर्ण विचार बन गए थे, जिससे *विश्वासियों* की उलझन बढ़ गई थी। यूहन्ना ने यीशु को ''परमेश्वर का पुत्र'' (यूहन्ना 20:31) के रूप में प्रस्तुत करके उसके परमेश्वर होने पर ज़ोर दिया।

हम कह सकते हैं कि मत्ती आज बाइबल के छात्र के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र है और मरकुस सामान्य व्यक्ति के लिए, जिसमें व्यापारी लोग शामिल हैं, जबकि लूका विशेष तौर पर विद्वानों, विचारकों, आदर्शवादियों तथा सच्चाई के खोजने वालों का ध्यान खींचता है। दूसरी ओर, यूहन्ना को ''सार्वभौमिक सुसमाचार'' कहा गया है, जो हर युग के हर व्यक्ति को आकर्षित करता है।

इसके अलावा, हम कह सकते हैं कि मत्ती का उद्देश्य यीशु को *प्रतिज्ञा किए हुए* उद्धारकर्त्ता; मरकुस का, *शक्तिशाली* उद्धारकर्त्ता; लूका का, *सिद्ध* उद्धारकर्त्ता; और यूहन्ना का उद्देश्य *व्यक्तिगत* उद्धारकर्त्ता के रूप में दिखाना है। परन्तु इन भिन्नताओं के बावजूद हमें इस तथ्य को नज़रअंदाज नहीं करना चाहिए कि हर पुस्तक का अन्तिम उद्देश्य एक ही है: और वह है *सब लोगों को उद्धार के यीशु के ज्ञान तक लाना!*

चार वृत्तांतों में क्या बताया गया है

सुसमाचार के चारों वृत्तांतों के लिए कई बार ''जीवनी'' शब्द का इस्तेमाल किया जाता है, परन्तु वास्तव में, चारों पुस्तकें जीवनियां नहीं, बल्कि वे ''उपदेशात्मक वृत्तांत''

हैं। (''उपदेशात्मक'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''didactic'' है, जो यूनानी शब्द से निकला है और जिसका मूल अर्थ ''शिक्षा'' है।) नीचे कुछ कारण दिए गए हैं, जिनसे पता चलता है कि हम इन वृत्तांतों को जीवनियां क्यों नहीं मानते:

(1) इनमें यीशु की जीवनी बताने का कोई प्रयास नहीं किया गया। पहले तीस वर्ष लगभग खाली हैं, जबकि चारों वृत्तांतों का चौथे से अधिक भाग केवल एक ही घटना (यीशु की मृत्यु) पर केन्द्रित है। यीशु की बारह से तीस वर्ष की आयु के बीच की किसी भी घटना का कोई रिकॉर्ड हमारे पास नहीं है। यदि कोई मेरे जीवन की कहानी लिख रहा हो और वह बारह से तीस वर्ष के समय को यूं ही छोड़ दे, तो उससे इस बात का कोई संकेत नहीं मिलेगा कि अपनी पत्नी से मेरी पहली मुलाकात कैसे हुई थी या मैंने प्रचार करने का निर्णय क्यों लिया और न ही मेरे विवाह के बारे में, मेरे काम के आरम्भ के बारे में या मेरे बच्चों के जन्म के बारे में पता चलेगा। यह वास्तव में एक बड़ी ही अजीब जीवनी होगी!

(2) यद्यपि इन वृत्तांतों में मूलत: क्रम का ढंग जैसे जन्म, बचपन, बपतिस्मा, सेवकाई, मृत्यु तथा पुनरुत्थान, अपनाया गया है, परन्तु लेखकों के लिए कभी भी कालक्रम महत्वपूर्ण नहीं था। उन्होंने घटनाओं को निश्चित सच्चाइयों पर ज़ोर देने के लिए इकट्ठा किया।

(3) किसी भी लेखक ने यीशु की शारीरिक संरचना का वर्णन नहीं किया। क्या कोई जीवनी लेखक ऐसी गलती कर सकता है?

चारों पुस्तकें उपदेशात्मक शिक्षा हैं, जिनमें कालक्रम पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया, इसलिए चारों वृत्तांतों को एक वृत्तांत (''सामंजस्य'') में इकट्ठा करना आसान नहीं है। परन्तु जैसा पहले कहा गया है कि यह प्रयास महत्वपूर्ण हो सकता है। पाठ के अन्त में ''सुसमाचार के वृत्तांतों में दी गई सामग्री'' चार्ट देखें, इससे आपको चारों पुस्तकों के यीशु की कहानी में योगदान का विचार मिल जाएगा।

ध्यान दें कि सुसमाचार के समानान्तर वृत्तांतों में मूलत: वही सामग्री है, जबकि यूहन्ना के वृत्तांत में मुख्य रूप से अतिरिक्त सामग्री दी गई है। एक ही समय के बारे में बताने के बावजूद, यूहन्ना ने मत्ती, मरकुस और लूका से अलग जानकारी दी है। यूहन्ना के वृत्तांत में यीशु के जन्म, यीशु के बपतिस्मे तथा परीक्षा, पहाड़ी उपदेश, सभी दृष्टांतों, रूपांतर, प्रभु-भोज की स्थापना और गतसमनी के संताप को छोड़ दिया गया है, जबकि सुसमाचार के सहदर्शी विवरणों में इन सभी का वर्णन है।

यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने तथा पुनरुत्थान के अलावा चारों वृत्तांतों में केवल कुछ ही घटनाओं का उल्लेख है। यदि किसी घटना को चारों पुस्तकें बताती हैं तो इसका यह अर्थ है कि उस घटना का विशेष महत्व है और उस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

चारों वृत्तातों में भिन्नताएं

सुसमाचार की एकता बनाने वाले व्यक्ति को शीघ्र ही पता चल जाता है कि एक ही घटना के वृत्तांतों में विभिन्नताएं पाई जाती हैं। इन विभिन्नताओं की व्याख्या कैसे की जा सकती है?[8]